AICRP on Goat
Marwari Field Unit, RAJUVAS, Bikaner

सफलता की कहानी मोहन राम की जुबानी

बीकानेर जिले के हिम्मतासर गाँव में रहने वाले मोहन राम पुत्र काना राम जाट (५७) एक किसान है। मोहन राम के परिवार में ६ पुत्रियां तथा ५ पुत्र हैं। दो छोटे पुत्रों को छोड़ कर सारे सदस्य अनपढ़ हैं, जो दसवीं-बारहवीं कक्षाओं में पढ़ते है।

मोहन राम करीब ३० वर्षों से भेड़ -बकरी पालन तथा कृषि का कार्य करतें हैं। पहले वह घर की आवश्यकतानुसार ४-७ बकरियां रखते थे तथा अपनी २० बीघा असिंचित (बारानी) भूमि पर कृषि करते थे। इस क्षेत्र में कृषि मुख्यतः वर्षा पर निर्भर करती है। अधिक वर्षा न होने के कारण अधिक पैदावार नहीं होती थी। इसी कारण मोहन राम की आर्थिक और सामाजिक स्थिति कमजोर थी।

लगभग सात साल पूर्व हिम्मतासर गाँव में वेटरनरी विश्विद्यालय की बकरी परियोजना प्रशिक्षण शिविर में बकरी पालन का प्रशिक्षण लेकर बकरी पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने की ठान ली। शुरू में उन्होंने २० मारवाड़ी नस्ल की बकरियां रखी और विश्विद्यालय तथा भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के तत्वाधान में चल रही बकरी परियोजना में पंजीकरण करवाया। समय समय पर परियोजना के अंतर्गत दी जाने वाली जानकारी तथा सुविधाओं का लाभ उठा कर आज एक सफल बकरी पालक है और ग्रामवासियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। आज उनकी बकरियां अधिक सेहतमंद है और अपेक्षाकृत अधिक शारीरिक भार वाली है जिससे उन्हें बाजार में अधिक मूल्य प्राप्त होता है।

परियोजना के तहत निम्न वैज्ञानिक तकनीक अपनाई जाती है तथा उनका महत्त्व पशुपालक भाइयों को बताया जाता है -

- परियोजना के अंतर्गत उन्हें संतुलित आहार का महत्त्व समझाया गया। अपने खेत में उन्होंने बेर व खेजड़ी के पेड़ लगा रखे है जो कि बकरियों का पसंदिदा आहार है तथा बकरियों की शारीरिक जरूरतों को काफी हद तक पूरा कर देता है।
- परियोजना के अंतर्गत वर्ष भर विभिन्न बिमारियों से बचने के लिए टीके (वैक्सीन) लगाए जाते है तथा अन्तः तथा बाह्य परजीवियों से बचने के लिए दवाई भी दी जाती है। इन सब के फलस्वरूप अब बकरियां अपेक्षाकृत सेहतमंद होती है तथा अच्छी वृद्धि दर्शाती हैं।
- इस सब के आलावा उन्हें समय समय पर उन्नत बकरी पालन के बारे में अवगत भी कराते रहते हैं।
- परियोजना के तहत उच्च गुणवत्ता का मारवाड़ी बकरा भी प्रजनन के लिए दिया गया है।

आज मोहन राम जी वर्ष भर में लगभग ४० से ६० पशु बेच देते है बकरियों से प्राप्त दूध घर में भी प्रयोग करते है तथा बचा हुआ दूध बेच कर भी आर्थिक लाभ उठा रहे है। बकरी के बालों से रस्सियाँ बना कर चारपाइयाँ भी

बनातें हैं। बकौल मोहन राम जी वर्ष भर में उन्हें २-३ लाख की आमदनी हो जाती है।

आने वाले समय में सभी स्वास्थ्य संबधी उपायों को अपनाते हुए उन्नत किस्म के बकरे रेवड़ में बकरियों की संख्या के हिसाब से वितरित करेंगे तथा पंजीकृत किसानों के रेवड़ों में से अच्छी किस्म के बकरों को अन्य बकरी पालकों को वितरित करेंगे। हर दूसरे वर्ष बकरों को अदला बदली की जाएगी । समय समय पर बकरी पालकों को नयी तकनीक की जानकारी प्रशिक्षण के माध्यम से दी जाएगी।